E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 2, Issue- 1 | January 2025

प्राचीन समाज में प्रचलित आभरण: उनके नाम एवं प्रकार

सोनल नरवरे [1], सोनाली नरवरे [2]

[1, 2] एम.ए. (इतिहास) बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी, वाराणसी

सारांश:

लोगों के व्यक्तिगत श्रृंगार की सबसे शानदार और आकर्षक वस्तु आभूषण है। रंग, चमक, टिकाऊ मूल्य और सामग्री की कमी इन विशेषताओं के कारण आभूषण मनुष्य को आकर्षित करते हैं। मानव मन का सौंदर्य के प्रति आकर्षण आज से नही बल्कि अत्यंत प्राचीन समय से रहा है जब मानव जीवन यापन के लिए नई नई चीजों की खोज कर रहा था। रंग बिरंगे फूल पत्तियां टहनियां, सूर्य की स्वर्ण आभा, चंद्र का रूप बदलना (चंद्र कलांए), ज्यामितिय आकर और आकृतिया, नदियों और समुद्र के जल की लहरे, एक स्थान से दूसरे स्थान पर दौड़ते हुए विभिन्न रूप रंग के पशु- पक्षी, कीट-पतंगे; प्रकृति के इन सभी आकर्षक रूपों तथा भौतिक पदार्थ से लगाव (जैसे:- शंख, कौड़ी, मोती, सीपी, मणि, रत्न, धातु, हाथी दांत) ने मनुष्य की आभूषण पहनने की इच्छा को विकसित किया। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में विभिन्न प्रकार की मोतियों की लड़ी अर्थात यष्टि जो कि सिरबंध, कमरबंध, मणिबंध, हार और पायल की तरह पहनी जाती थी का उल्लेख किया है।

प्रस्तवाना:

ये आभूषण समय के सापेक्ष प्राचीन भारतीय विज्ञान एवं उन्नत तकनीकी ज्ञान ,उसमें परिवर्तन एवंविकास की गाथा के द्योतक है जिसमें प्रारंभिक प्रचलित तकनीक फिर उनमें परिवर्तन, औजार, मणिओ के निर्माण, रंग बनाना एवंचढ़ाना, कच्ची मिट्टी एवंपकी मिट्टी के बने आभूषण, रत्नों का परिस्करण इत्यादि शामिल है।जैसे:- सिंधु सभ्यता से प्राप्त आभूषण तांबे, कांसा ,टेराकोटा, सेलखड़ी आदि के बने थे, जबकि इसके बाद वैदिक सभ्यता में सोने ,चांदी, रत्नों, मोतियों से आभुषण निर्माण किया जाना।

साहित्यिक तथा पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर ज्ञात होता की पहले नर ने अपनी यौन इच्छाओं की पूर्ति हेतु मादा को आकर्षित करने के लिए श्रृंगार या आभूषण पहनना शुरू किया जिसके बाद संभवत :स्त्रियों ने भी इसी उद्देश्य से आभूषण धारण किये। शरीर के विभिन्न अंगों में आभूषण पहने जाते है; सिर पर चूड़ामणि, गले में हार(ग्रेवेयक), कानों में कुंडल , भुजाओं में केयूर, हाथो में कंकन, कमर में करधनी, पैरों में नुपुर इत्यादि(अमरकोश)।

आभुषण का अर्थ:-

आभरण :- मानव निर्मित वह वस्तु जिसके धारण करने से शरीर की शोभा बढ़ जाती है।

पाणिनि अष्टाध्यायी के मन्त्र ८।३।१८ में 'अरंकृत' शब्द प्राप्त होता है जो सम्भवतः 'अलंकृत' का प्राचीन रूप है।

ऋग्वेद में 'अरंकृत' शब्द आभूषित करने के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है (ऋक्-१, २, १) ,जिससे अरंकार (अलंकार) शब्द भी प्राप्त हुआ है जिसका अर्थ आभूषण है।इस प्रकार हम इस तथ्य पर पहुँचते हैं कि ऋग्वेदकाल में आभूषण धारण किये जाते थे और आभूषण से सजे हुए या सुशोभित को अरंकृत कहते थे।जैसे इस (ऋक्-१, २, १)मंत्र में सोम को अरंकृत कहा है।

ऋग्वेद में ही एक और शब्द 'आभरः' प्राप्त होता है संभवतः आगे चलकर 'आभरण' शब्द बना है जो आभूषण/अलंकार के अर्थ में प्रयुक्त होता है।(ऋक्-८, ९७, १)। यहाँ हमें यह भी संकेत मिलता है कि वधू विवाह के समय विविध आभूषणों को धारण करती थी (ऋक् -१, १२२, २)।

आभूषण : -ऐसी वस्तुओं या विशेषताओं की एक प्रणाली, श्रेणी या शैली; अलंकरण अथवा किसी चीज़ का उपयोग सुन्दर बनाने के लिए किया जाता है; सजावट, अलंकार।

अलंकार :- 'अलंकरोति इति अलंकार'

अर्थात् जो अलंकृत / सुशोभित/ आकर्षण या सौन्दर्य में वृद्धि करता है वहीं अलंकार है जो कि मूलतः मनुष्य की सौन्दर्य संबंधित प्रवृत्ति का द्योतक है प्रकृति में जो कुछ भी श्रेष्ठ, कल्याणप्रद एवंसुन्दर है वह आभूषण से तुलनीय है। शरीर को अलंकृत करने के हेतु हमें ऋग्वेद के अरंकृत के स्थान पर अथर्ववेद (१०,१,२५) स्वरंकृत शब्द प्राप्त होता है। दूसरा शब्द ' धाता' भी अथर्ववेद(८, ५, १८)

में मिलता है जो धारण करने के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।

सर्वप्रथम सीधे तौर अलंकार शब्द आभूषणों के हेतु तैत्तिरीय संहिता में प्राप्त होता है

आभूषण के नाम एवं प्रकार:-

क. मोतियों के आकार के अनुसारः-

1. शीर्षक-एक समान आकार के मोतियों की माला, जिसके बीच में एक बड़ा मोती हो।
2. उपशीर्षक -एक समान आकार के मोतियों की माला, जिसके बीच में 5 बराबर आकार के बड़े मोती हों।
3. प्रकांडक धीरे-धीरे घटते आकार के मोतियों की माला, जिसके बीच में एक बड़ा मोती हो।
4. अवघटक-एक समान आकार के मोतियों की एक माला।
5. तरलाप्रतिबंध - मोतियों की एक माला, जिसके बीच में एक चमकीला मोती हो।

ख. मोतियों की मालाओं की संख्या के अनुसारः-

1. इंद्रच्छंद-1000 लड़ी/तार का हार।
2. देवच्छंद -100 लड़ी का हार।
3. एकावली - 1 लड़ी का हार।
4. अर्धगुच्छ- 24 लड़ी का हार।
5. मानवक- 20 लड़ी का हार।
6. अर्धमाणवक-10 लड़ी का हार।
7. गुच्छ -32 लड़ी का हार।
8. नक्षत्रमाला -27 मोतियों वाला एकावली हार।
9. गोस्तन - 4 लड़ी का हार।
10. अर्धहार -12 लड़ी का हार।

विशेषः- शीर्षक, उपशीर्षक अथवा अन्य प्रतिरूप की उपरोक्त के अनुसार लड़ी की संख्या होती है तो उसे पैटर्न के नाम के साथ पुकारा जाता है जैसे- यदि किसी शीर्षक में 20 लड़ी हो तो उसे गुच्छशीर्षक कहते हैं। जबकि किसी माला में सभी लड़ी शीर्षक प्रतिरूप में हो तो उसे 'शुद्धहार' कहते हैं। केंद्र में रत्न से युक्त हार, उनके संबंधित मानवक बन जाते हैं। केंद्र में रत्न जैसे फलक/पट्ट से युक्त हार को फलक हार कहते हैं, जैसे जिस हार में तीन पट्टनुमा रत्न हों, उसे 'त्रिफलक' कहते हैं और जिस हार में पाँच पट्टनुमा रत्न हों, उसे 'पंचफलक' कहते हैं।

ग. मोती के साथ अन्य पदार्थ जैसे धातु, रत्न से निर्मित हार:-

1. एकावली-शुद्ध मोतियों की एक लड़ी/माला।
2. यष्टी- एक मोतियों माला जिसमे बीच में रत्न भी हो।
3. रत्नावली-सोने की गोलियाँ युक्त मोतियों की माला।
4. अपवर्तक- मोतियों की माला जिसमे एक मोती के बाद एक सोने की गोलियां/बूंदे हो।
5. सोपानक-जिसमे दो मोतियों की लड़ी के बीच एक सोने की लड़ी हो।
6. मणिसोपानक-दो मोतियों की लड़ी के बीच में रत्न की लड़ी हो।

भरत-मुनि ने नाट्यशास्त्र (आहार्याभिनय नामक अध्याय) में आभूषणों के चार प्रकार बताएं है:-

1. आवेध्य- ऐसे भूषण जिन्हें अंगों में छेद करके पहना जाता है जैसे:- कर्णफूल, कुंडल आदि।
2. बंधनीय- ऐसे आभूषण जिन्हे शरीर पर बांधकर पहना जाता है जैसे - पहुंची, अंगद, बाजूबंद आदि।
3. प्रक्षेप्य - ऐसे आभूषण जिनमें अंग को डालकर पहना जाता है जैसे- वलय, कंकन, आंगुलियक आदि।
4. आरोप्य- ऐसे आभूषण जिन्हें शरीर पर लटकाकर पहना जाता है जैसे:-करधनी, कंठी, मुक्ताहार आदि।

विभिन्न पुरातात्विक एवंसाहित्यिक स्त्रोतों के आधार पर आभूषण के नाम और प्रकार निम्नलिखित है-

सिर के आभूषणः-

1. स्त्रजः- स्वर्ण के मणियों से बनी छोटी माला जो मस्तक पर पहनी जाती है।
2. चूड़ामणि/सिरोरत्न : बालों के गांठों के चारों ओर का आभूषण जिसे सिर के मध्य अथवा जहा सिंदूर लगाया जाता है।
3. किरीट/मुकुट :- ललाट में पहना जाने वाला आभूषण, सामान्यतः राजा के द्वारा पहना जाता है।
4. बालपाश्या/पारितथ्याः बालो के बीच के भाग में सोने की जंजीर से लटकाकर पहना जाने वाला।
5. पत्रपाश्या/ललाटिकाः- माथे के चारों ओर पहने जानी वाली पट्टिका या वेणी में पहनी जाने वाला आभूषण।
6. शिखापाशः- गोलपत्रकार पिंड जो शिखा के बीच कर्णिका स्थान में पहना जाता है।
7. मुक्तजालिका : ललाट के समीप मछली के आकार के पत्र में मोतियों का गुच्छा तोरण में लगा।
8. शीर्षजालक/चित्रकः एक रुप तथा भिन्न रंगों की मणियों से बना भूषण।
9. मौलीः- पगड़ी की तरह का मुकुट।
10. ओपसः- मस्तक के ऊपर बांधी जाने वाली धातु की पट्टी।
11. रत्नजालः एक जाल जो अमूल्य रत्नों से बना बालों के गुच्छों को ढकता है।

कान के आभूषण:-

1. कुण्डल :- कान के निचले कोमल भाग (अधरपाली) में लटका कर पहना जाने वाला वृत्ताकार भूषण।
2. कीला/उत्तरकर्णिका:- बाह्य कान के ऊपरी छिद्र में पहना जाने वाला भूषण।
3. मोचक:- कान के मध्य भाग के छिद्र का भूषण।
4. कर्णिका:- कमल की फली की तरह का आभूषण।
5. कार्णोत्पल :- पत्ती की तरह के कान के बुंदे।
6. कर्णवेष्टन:- ऐसा आभूषण जो कान ढक ले।
7. प्रवर्ता:-एक प्रकार की बाली जिसमें एक सिरा दुसरे पर चढ़ा हुआ हो।
8. कर्णफूल:-फूलों की तरह सजावट वाले आभूषण।
9. प्रकाश:- गोलाकर कर्ण टॉप्स।
10. कर्णसोवन, प्रावेपा:- कर्ण टॉप्स।
11. वल्लीका:- मोती की लटकन वाला आभूषन।
12. स्वस्तिक:-स्वस्तिक डिजाइन वाला आभूषण (पतंजलि)।
13. वप्र कुंडल:- सोने के चौकोर टुकड़े पर कमल उकेर कर उसकी डंठल की छिद्र में दो बार छिद्र में घूमा कर स्वतंत्र रूप से लटकाया जाता है।
14. चक्र:- आंख या आंवला की डिजाइन वाला आभूषण।
15. पत्र कुंडल:- हाथी दांत या स्वर्ण का पत्र आकार का कुंडल।
16. झुमका-यह घंटी के आकार का होता है जिसके किनारे पर वार्ताकार क्षैतिज में छोटी घंटियों (किणिकिनी) की दो पंक्तियाँ लगी होती हैं।
17. सर्प कुंडला/मृणाल कुंडल:- ठोस सर्पिलाकार कुण्डल।
18. चक्र कुंडल:- घूमते हुए पहिए/चक्र के भांति के कुंडल।
19. कन्नालोडाक:- सीपी की तरह दिखने वाले लंबे और पतले कुंडल।
20. तालपत्र/तालीपट्ट/हेमतालीपट्ट:-ताड़ के पत्तेनुमा कीमती धातुपत्र के कुंडल।

गले के आभूषण:-

1. ग्रेवेयक / कंठभूषा:- गले में पहने जाने वाले आभूषण के नाम,
2. लम्बन/ललंतिका: गले से लेकर नाभि तक की कंठी,
3. प्रालंबिका:- गले से लेकर नाभि तक की सोने की बनी कंठी,
4. उरसूत्रिका :- गले से लेकर नाभि तक की मोती की बनी कंठी,
5. हार/मुक्तावली:- मोतियों की बनी माला,
6. निष्क:- सोने या चांदी के सिक्के से बना हार।
7. कंठी :- लम्बाई में छोटा और गले से चिपका हुआ हार/माला।

8. रुक्मः- सोने का बना गोल आभूषण, जो वक्ष स्थल पर पहना जाता था जिसमें 21 गुंडिया बनी रहती थी जो कि सूर्य का प्रतीक थी।
9. स्थागर :- सम्भवतः बड़े मणियों की माला।
10. वनमाला :- फूलों से बनी मोटी माला, जो की कमर से नीचे घुटनों तक जाती है जो संभवतः मंदार, पारिजात, कदंब, कमल, अर्जुन, अशोक, कुंदा, कंडाल तथा मौसमी फूल पत्तीयों से बनाई जाती रही होगी।
11. फलक हार :- वह हर जिसमें एक से अधिक लड़ियों/बेला/लता/श्रृंखला के साथ में धातु का गोल, आयताकार अथवा चौकोर पदक / स्लैब जड़ा होता है द्विफलका, त्रिफलका, चतुष्फलका, पंचफलका आदि (अर्थशास्त्र)।
12. मोहनमालः- स्तनों के बीच लटकने वाला मोतियों का लंबा हार।
13. कंठी/हंसली:- गले का ठोस धातु से निर्मित कॉलर जैसा तंग आभूषण जो केंद्र में चौड़ा होता है जबकि दोनों छोर पर तुलनात्मक रुप में संकरा।
14. अष्टमांगलिक हार: इस हार में शुभ के प्रतीक मांगलिक चिन्हः पद्म, वत्स, मीन मिथुन, स्वास्तिक, कल्प वृक्ष, वैजयंती, त्रिरत्न, परसु, वर्धमान आदि वाले पेंडेंट होते है,
15. ग्रीवासूत्र :- विवाह के अवसर पर पहना जाने वाला आभूषण शायद मंगल सूत्र,
16. कंठसूत्रः नाट्य शास्त्र के अनुसार स्त्रियों द्वारा कंठ में पहने जाने वाला आभूषण शायद मंगल सूत्र।
17. निर्धोतहारः- संभवतः ओस की बूंदों की तरह पारदर्शी मोतियों की माला।
18. त्रिसरः- तीन लड़ी की सोने की कंठी/मुक्ताहार,
19. वैकेक्ष्यक हार- इसे 'उपवीत' की तरह कंधे से पहना जाता है, इसमें 2 डोरियो में घंटियां और मणि लगे होते है,
20. छन्नवीरः- छाती से जाती हूई दो पट्टियों वाला आभूषण। बा हार जिसमें कभी कभी बीच में पेंडेंट/पदक लटका होता था।
21. अर्द्धहारः- अर्धचंद्रनुमा हार।
22. योक्राः- इस हार में धातु प्लेट को 3 से 6 लड़ से जोड़ा जाता है।
23. वैजन्तीः- भगवान विष्णु का हार जिसमें 5 रत्न मोती, माणिक, पन्ना, नीलम, हीरा प्रकृति के 5 तत्वों आकाश, जल, अग्नि, पृथ्वी, वायु के द्योतक है।

विशेषः- नाट्य शास्त्र के अनुसार यस्टि अर्थात लता/श्रृंखला।

तरलः- हार के बीच की बड़ी मणि (टिकड़ा)।

तलकः- दरवाजे के दो पल्लो को मिला देना।

ग्रंथिमः - सूत्र (धागे) या पुष्पों का बना गुच्छा।

त्रिवेणीः- वक्ष का आभूषण।

हिरण्यउर्वस्तः- सोने का हार।

हिरण्यबाहुः- सोने का भुजबंध।

हिरण्य वर्तिनीः- सोने का काटिबंध।

उंगली के आभूषणः-

1. वेतिकाः- एक प्रकार की ऊंगली की मुद्रा जो सूक्ष्म कटक (कड़े) के रूप में हो।
2. मुद्रिकाः- नक्षत्र के आधार पर रत्नों से जड़ी हुई नक्काशी युक्त हाथों की सुंदरता बढ़ती है। विशेषः- अंगुलीयक और अंगुलीय तिलकः- उंगलियों के आभूषण।

बाजू के आभूषणः-

1. ऊपरी भुजा यानि पिछले भाग में पहना जाने वाला आभूषण 'बाजूबंद' कहलाता है
2. अंगदः- विभिन्न डिजाइन्स वाला चौड़े आकर का बाजूबंद साधारण धातुपत्र का डोरी से बांधा जाने वाला आभूषण।
3. अनंतः सर्पिल आकर का भुजबंद।
4. केयूरः- पर्वत की तरह चोटी या फूल के आकार का, जिसे बांधा नहीं जाता है।
5. तालभाः- फूल के आकार वाला ताड़ के पत्ते जैसा आभूषण।
6. परिहेंगः-1,2,3,4, और 5 रेखाओं वाला वृत्ताकार बाजूबंद।
7. रक्षासूत्रः-इसे मणिबंध, भुजबंध या यज्ञोपवित की तरह बाए कंधे से तिरछा करके शरीर के दाहिने हिस्से की ओर कंधे से कमर की पर लटकता हुआ पहने है सम्भवतः यह सोने चांदी या किसी अन्य धातु का जंजीरनुमा भूषण।

कमर/कटि के आभूषणः-

नाट्य शास्त्र के अनुसार जिसके तल में अनेक मुक्ताये जड़ी हो

ऐसी मेखला, कांची, राशना और कलाप ये कमर के आभूषण है। अमरकोश के अनुसार क. करधनीः- स्त्रियों के कटि/कमर का आभूषण। ख. करधनः पुरुष के कटि/कमर का आभूषण।

1. तलकः- नाभि के नीचे पहना जाने वाला आभूषण।
2. सूत्रक :- तलक के नीचे पहना जाने वाला आभूषण।
3. कांचीः- 1 लड़ वाला कटि भुषण यह सोने और चांदी के मोतियों से बनी होती है।
4. सप्तकीः- 7 लड़ी वाला कटि भुषण।
5. मेखलाः- 8 लड़ी वाला कटि भुषण।
6. राशना :- 16 लड़ी वाला कटि भुषण।
7. सारसन/कलापः-25 लड़ी वाला कटि भुषण।
8. मणि मेखलाः- श्रोणिसूत्र और कटि सूत्रः बेल्ट/पट्टे की तरह का आभूषण जिनमें यदि मणि लगे हो तो इन्हे' मणि मेखला ' कहा जाता है। नूपुर, किंकिणी घंटिका, रत्नजालक एवंघोषयुक्त कटक ये गुल्फ (एड़ी के उपर की गठान) के ऊपर पहनने वाले आभूषण है।
9. हेममेखला :- सोने का बना कटिबंध/कटि सूत्र।
10. सुवर्ण सूत्रः- सोने की बनी धागेनुमा करधनी।

11. किंकिणी:- स्त्रियों द्वारा पहने जाने वाली करधनी जीसमें बहुमूल्य रत्नों से जड़ी अनेक छोटी-छोटी खनकती घंटियाँ होती थीं, जो स्त्री के एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने पर मधुर ध्वनि उत्पन्न करती थीं। संभवतः किंकिणी:- पहले कटि का आभूषण बाद में पैरों में पहना जाने लगा।

हाथ के आभूषणः-

भुजा के अगले भाग में पहना जाने वाला आभूषण कंगन या कंकन या कड़ा (कटक) होता है।

1. सघोषः ध्वनि उत्पन्न करने वाले वलय।
2. निकुंचक:- बाहु के अग्र भाग यानि मणिबंध में पहना जाने वाला आभूषण।
3. 3 वलय/चूड़ी :- हाथ के पतले एवंहल्के गोलकार भुषण।
4. कड़ा/कंगनः- हाथ के मोटे मोटे एवंभारी गोलाकार भूषण।
5. रत्नवलयः- रत्नों से जड़ा हुआ हाथ का आभूषण।
6. कनकडोराः-सोने के तार से गूंथा हुआ आभूषण।
7. उच्छातिः- खजूर जैसे डिजाइन वाला गहना कोहनी के निचे और मनिबंध के उपर पहना जाने वाला गहना है।
8. कंकन: कुंडलीत कलाई के चारों और लपेट कर पहना जाने वाला आभूषण जिस पर त्रिरत्न चिन्ह अंकित होता है मोटे एवंपतले दोनो तरह के, कभी कभी रस्सी की तरह गूंथे हुए।
9. वलय:- मोटा धातु का निर्मित कड़ा।
10. हस्तकलपकः- कई चूड़ियों को पतले तार से कुंडलित करके पहना जाता है।
11. भुजपाशः- सोने का कंकन।

पैरों के आभूषणः-

1. नूपुर :- जानू/जांघो के नीचे टखनो पर पहना हुआ जाने वाला आभूषण।
2. किंकिणी:- ऐसे नूपुर जिनमें घुंघरु लगे हो या छोटी घंटियों वाली पायल।
3. कड़ा / सांकल:- सादे गोलाकार वलय/छल्ले।
4. रत्नजालकम / प्रपद: पैरो के अग्र भाग को ढकने वाले रत्नों का जलीदार आभूषण।
5. मंजीराः- इसमें छोटी छोटी झनकती हूई घंटियां होती है जो किसी संगीत वाद्य की ध्वनि उत्पन करती थी जिसे मंजी कहते है के कारण या मंजूरम की तरह पैरों में लपेटा जाने वाला आभूषण।
6. पादवलयः-पैरों की रत्नों से अलंकृत मोटी चूड़ियां।
7. पादपत्र:- जंघाओं का आभूषण।
8. अंगुष्ठतिलकः- अंगूठे पर नाना प्रकार की विधाओं से तिलक लगाना।

फूलों के बने आभुषण:-

1. एकटोवंटक: जिस माला में फूलों के डंठल एक तरफ हो।
2. उभटोवंटक:- जिस माला में फूलों के डंठल दोनों तरफ हो।
3. उरच्छदा :- वक्षस्थल पर पहने जाने वाली माला।

4. अवेला:-कानों में पहने जाने वाली माला।
5. पाणिनि ने उल्लेख किया है कि जो व्यक्ति अपने शरीर को माला से सजाता था, उसे मालाभारी और मालाभारिणी कहा जाता था। जबकि पतंजलि ने एक सूत्र बनाया है 'उत्पल-माला भरिणी' यानी "कमल की माला से सजी लड़की"।
6. मंजरिका :- संभवतः यह मंजरी की माला है। ओल्डेनबर्ग के अनुसार इसका आकार भुजबंद जैसा होना चाहिए।
7. विधुतिका पंख जैसी माला है।
8. वतंसक' कलंगी जैसी माला है।

उपसंहार:- प्राचीनकाल में प्रचलित अनेक आभूषण आज भी उसी रूप में या कुछ थोड़े से परिवर्तन के साथ पहने जा रहे है।जैसे मोतियों की माला/मुक्ता हार, कंगन, बाजूबंद, मणिबंध(ब्रेसलेट), पायल, कड़ा, कमरबंध ,गलोबंद, पैजन ,कल्ले, तोड़े आदि जबकि ग्रेवेयक-इसे वर्तमान में हंसली, कंठी, वज्रट्टी या चौकर के रूप में पहना जाता है इसी प्रकार वैदिक एवंउत्तर वैदिक काल में प्रचलित निष्क को हमेल के रूप जाना जाता है। अतः उक्त शोध के माध्यम से हमने यहां प्राचीन आभूषणों के प्रकार का ज्ञान प्राप्त किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. वर्मा एम.(1989) ड्रेस एंड आर्नामेंट इन असिएंट इंडिया: द मौर्य एंड शुंग पीरियड्स(अंग्रेजी),वाराणसी, इंडोलॉजिकल बुक हाउस।
2. भूषण जे.बी.(1964) इंडियन ज्वेलरी आर्नामेंट एंड डेकोरेटिव डिजाइन(अंग्रेजी),द्वितीय संस्करण,बॉम्बे, डी.बी. तारापोरवाला संस एंड कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, ट्रेजर हाउस ऑफ बुक्स।
3. पांडे आई.पी. (1988) ड्रेस एंड आर्नामेंट इन असिएंट इंडिया(अंग्रेजी),वाराणसी, भारतीय विद्या प्रकाशन।
4. सहाय एस.एस. (2016) प्राचीन भारतीय विज्ञान और प्रौद्योगिक, दिल्ली, मोतीलाल बनारसी दास।
5. सहाय एस.एस.(2020) प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास , दिल्ली,मोतीलाल बनारसी दास।
6. राय गोविंद चंद्र (1964) वैदिक युग में भारतीय ज्वैलरी, वाराणसी,चौखंबा विद्याभवन।
7. शास्त्री आचार्य मधुसूदन (1981) श्रीभरतमुनिविरचितम नाट्यशास्त्रम् (तृतीय भाग),बनारस, बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी।
8. घोष मनोमोहन (1951) द नाट्यशास्त्र एस्क्राइब्ड टू भरत-मुनि(अंग्रेजी), कलकत्ता, एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल।
9. शर्मा डॉ० रामानन्द (2001) कामसूत्र श्रीवात्स्यायनमुनिप्रणीत,कृष्णदास अकादमी,वाराणसी, चौखम्बा प्रेस।
10. लेख; ठाकुर प्रिया,फ्लोरल ज्वैलरी इन असिएंट इंडियन ट्रेडीशन, सार्क संस्कृति, खंड 6 (2018), कोलंबो, सार्क सांस्कृतिक केंद्र।
11. लेख; चक्रवर्ती महुआ, प्राचीन भारतीय आभूषणों की पुनर्व्याख्या,

12. https://ssrn.com/abstract=4314351
13. लेख; बिष्टव आर.एस., ज्वेल्स एंड ज्वेलरी इन अर्ली इंडियन आर्कियोलॉजी एंड लिटरेचर (Jewels_Jewellery_Early_Indian_Archaeology_Literature_2017_Bisht.pdf).
14. लाल श्री मन्ना (1937) श्रीमदअमरसिंहप्रणीत:अमरकोश , बनारस, मास्टर खिलाड़ीलाल एंड संस पब्लिकेशन।
15. राय कृष्ण दास(1996) भारतीय मूर्ति कला, काशी, प्रधानमंत्री नागरी प्रचारिणी सभा।
16. कंगले आर.पी. (1960-65) कौटिल्य अर्थशास्त्र(अंग्रेजी), 3 भाग, दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन।
17. शमाशास्त्री आर. (1961), कौटिल्य अर्थशास्त्र(अंग्रेजी), मैसूर ,श्री रघुवीर प्रिंटिंग प्रेस।